Vol 5 Issue 8 May 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Manichander Thammishetty
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA
UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.........

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.ror.isrj.org

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 8 | May - 2016

Review Of Research

उपनिषद् कालीन शिक्षा – एक संक्षिप्त अध्ययन

प्रदीप तिवारी[1] एवं राधिका[2]
[1]संस्कृत विभाग, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी, (उ. प्र.), भारत।
[2]प्राचीन इतिहास विभाग, राधा रमण स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सिकन्दरा, इलाहाबाद (कृ प्र.), भारत।

सारांश

भारतीय ऐतिहासिकता को सुगमता की दृष्टि से विभिन्न भागों में विभक्त किया गया है। इसी प्रकार प्राचीन भारतीय शिक्षा इतिहास को सरलता से अध्ययन के लिए वैदिककालीन, ब्राह्मणकालीन, उपनिषद् कालीन आदि भागों में विभक्त किया गया है। वैदिक साहित्य भारतवर्ष की अमूल्य निधि है। इसी वैदिक साहित्य में उपनिषद् सबसे अर्वाचीन साहित्य के रूप में माना जाता है।

प्रस्तावना

उपनिषनद्, शब्द की निष्पत्ति 'उप' और 'नि' उपसर्ग पूर्वक 'सदलृ' धातु से हुई है। यहाँ 'सदलृ' का प्रयोग (1) विशरण (2) गति तथा (3) अवसादन– इन तीन अर्थों में होता है। इस प्रकार उपनिषद् का अभिप्राय अविद्या का विशरण (नाश), ब्रह्म–विद्या की प्राप्ति तथा सांसारिक दुःखों का निस्तारण है।

विवेचना

उपनिषद् काल में भी वैदिक काल की तरह शिक्षा और अध्यात्म में कोई अन्तर नहीं माना गया। इस युग में भी मानव जीवन का परम उद्देश्य 'मोक्ष' को प्राप्त करना था।

अतः उपनिषद् कालीन शिक्षा का प्रमुख प्रयोजन ब्रह्मज्ञान ही था। उपनिषद् में कहा गया है कि शिक्षा का परम उद्देश्य 'मोक्ष' है। 'मृत्योर्माऽमृतं गमय'[1] इस मन्त्र के द्वारा ईश्वर से अमरता की ओर ले जाने की प्रार्थना की गयी है। इस प्रकार हमें प्रतीत होता है कि उपनिषदों में प्रमुख रूप से ब्रह्म, जीव, तत्त्व तथा जीवन–दर्शन आदि गूढ़ रहस्यों का प्रतिपादन हुआ है।

व्यक्ति के नित्य क्रिया–कलापों का कोई न कोई उद्देश्य होता है। निश्चित लक्ष्य के बिना हम अपने जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफल नहीं हो पाते है। शिक्षा के सम्बन्ध में भी यह नियम लागू होता है। शिक्षा के प्रयोजन देश, काल तथा सामाजिक परिवेश के अनुसार निश्चित होते है। परन्तु सभी परिस्थितियों में बालक अपने को समायोजित कर समाज के विकास में सहयोग करें।

उपनिषदानुसार शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य प्राप्त होते हैं

1.सृष्टि के सभी जीव अविद्या के वशीभूत परा, मृत्यु तथा आवागमन के दुःख से भययुक्त रहते हैं। आत्मज्ञान से ही व्यक्ति इन सभी सांसारिक दुःखों से मुक्त हो जाता है।

कहा भी गया है– 'तरति शोकम् आत्मवित' जो आत्मज्ञानी होता है। वह शोकयुक्त होता है।[2]

2.शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ''ब्रह्मज्ञान'' है। यह कठोपनिषद् में यम–नचिकेता संवाद से ज्ञान प्राप्त होता है।[3]

3.उपनिषदीय शिक्षा का एक मुख्य प्रयोजन आध्यात्मिक चेतना पैदा करना भी है। कठोपनिषद् में एक सूक्ति 'उत्तिष्ठ जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत्:'4 प्राप्त होती है। जो व्यक्ति को आध्यात्मिकता से लक्ष्य को प्राप्त करने पर बल देती है।

4.उपनिषद् वा   मय नैतिक उपदेशों से परिपूर्ण है जो नैतिक आचरण पर बल देती हैं। ज्ञान प्राप्ति हेतु चरित्र की पवित्रता अत्यन्त आवश्यक है। जो व्यक्ति दुश्चरित्रता से विमुख नहीं है। वह शान्त और एकाग्रचित नहीं हो सकता। वह परमज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकता।5

निष्कर्ष

चूंकि उपनिषद्कालीन शिक्षा का प्रयोजन ब्रह्मज्ञान एवं मोक्षयुक्त होकर व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास करन और समाज का नैतिक अभ्युदय करना था। जिसकी आधुनिक युग में नितान्त आवश्यकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.बृहदारण्यकोपनिषद्– 1/3/28 गीता प्रेस गोरखपुर–2004
2.केनोपनिषद्–2/5 गीता प्रेस गोरखपुर–2004
3.उपनिषदों की शिक्षा प्रणाली–विद्यासागर शर्मा, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली–2008, पृ0–61
4.कठोपनिषद्–1/3/14 चौखम्भा विद्या भवन–2007
5.कठोपनिषद्–2/24 गीता प्रेस गोरखपुर–2005 गोरखपुर

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- ✶ Directory Of Research Journal Indexing
- ✶ International Scientific Journal Consortium Scientific
- ✶ OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org